न अन्तम् = न अन्त; **न मध्यम्** = न मध्य; **न पुनः** = और न ही; **तव** = आपका; **आदिम्** = आदि; **पश्यामि** = (मैं) देखता हूँ; **विश्वेश्वर** = हे सम्पूर्ण विश्व के स्वामिन् ; **विश्वरूप** = हे विश्वरूपधारी प्रभो।

अनुवाद

हे सम्पूर्ण जगत् के स्वामिन्! आपके विश्वरूप को अनेक हाथ, पेट, मुख और नेत्रों से युक्त और सब ओर से अनन्त रूप वाला देखता हूँ। आपके इस रूप का न तो आदि है, न मध्य है और न अन्त ही है।।१६।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं, अनन्त हैं; अतः उनमें सभी कुछ देखा जा सकता है।

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता-
द्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ।।१७।।

किरीटिनम् = मुकुटयुक्त; **गदिनम्** = गदायुक्त; **चक्रिणम्** = चक्रधारी; **च** = तथा; **तेजोराशिम्** = तेजोमय; **सर्वतः** = सब ओर से; **दीप्तिमन्तम्** = प्रकाशमान्; **पश्यामि** = (मैं) देखता हूँ; **त्वाम्** = आपको; **दुर्निरीक्ष्यम्** = देखने में अति गहन; **समन्तात्** = व्यापक; **दीप्तानल** = प्रज्वलित अग्नि; **अर्क** = सूर्य के समान; **द्युतिम्** = ज्योतियुक्त; **अप्रमेयम्** = अनन्त।

अनुवाद

नाना प्रकार के मुकुटों, गदा और चक्र से सुशोभित आपका रूप अपने उस तेजोमय प्रकाश के कारण देखने में अति गहन है, जो सूर्य के समान प्रज्वलित और अगाध है।।१७।।

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।।१८।।

त्वम् = आप; **अक्षरम्** = अविनाशी; **परमम्** = परम; **वेदितव्यम्** = जानने योग्य हैं; **त्वम्** = आप; **अस्य** = इस; **विश्वस्य** = जगत् के; **परम्** = अन्तिम; **निधानम्** = आश्रय हैं; **त्वम्** = आप; **अव्ययः** = अविनाशी; **शाश्वतधर्मगोप्ता** = सनातनधर्म के रक्षक हैं; **सनातनः** = नित्य; **त्वम्** = आप; **पुरुषः** = स्वयं भगवान् ; **मतः मे** = (ऐसा) मेरा मत है।

अनुवाद

प्रभो ! आप ही जानने योग्य परमब्रह्म हैं, आप ही जगत् के परम आश्रय,